झारखण्ड सरकार
मुख्यमंत्री सचिवालय

प्रेस विज्ञप्ति

राँची,दिनांक–27.09.2018

- राष्ट्र का निर्माण जन आकांक्षाओं से ही --एम वेंकैया नायडू, उपराष्ट्रपति
- भारत चाहता है क पूरा वश्व शांति के साथ रहे--एम वेंकैया नायडू, उपराष्ट्रपति

राष्ट्र का निर्माण जन आकांक्षाओं से ही होता है। भारत में संवाद और वमर्श की सदियों पुरानी परंपरा रही है। ज्ञान की प्रामा णकता सफल संवाद की ही परिणति है। कृष्ण और अर्जुन के संवाद ही गीता का की रचना का बीज है। यह ध्यान देने योग्य है क प्राचीन समय से इस तरह के वचारों में महिलाओं ने भी भाग लया था। रांची के खेलगांव में प्रज्ञा प्रवाह के अंतर्गत लोकमंथन के कार्यक्रम का उदघाट्न करते हुए भारत के उपराष्ट्रपति श्री एम वेंकैया नायडू ने यह बात कही। उन्होंने कहा क लोक मंथन से हम अपनी सांस्कृतिक परंपराओं को ही फर से स्था पत कर रहे है। आज की परिस्थिति में वचार का आदान प्रदान होना जरूरी है। मैंने भारत दर्शन प्रदर्शनी को देखा है और युवा भी इसे देखे। 1857 में हुए पहले स्वत्रन्त्र संग्राम में सभी देशभक्तों ने भाग लया। अंग्रेजों को लगता था क भारत कभी एक नही हो सकेगा। आज समाज को खुद अपना इतिहास बोध करने की जरूरत है। भाषा, इतिहास, संस्कृति, लोक गीत आदि का आत्म मंथन हो। ऐसे प्रदर्शनी भारत के हर शहर में होना चाहिए। उन्होंने कहा क अगर हम भारतीयता को महत्व देने की बात कहते हैं तो हमे अपने बारे में जानना जरूरी है। इस लए मंथन का होना जरूरी है। हमें अपनी संस्कृति को लोगों के सामने रखना जरूरी है। आजादी के बाद जो शक्षा दिया गया उसमे भारत को ज्यादा महत्व नही दिया गया है। इस लए फर से इस मान सकता से बाहर निकल कर हमें मंथन करने की जरूरत है।

उपराष्ट्रपति ने कहा क हमें अपने माता पता को हमेशा याद रखना है। दूसरा अपनी जन्मभू म को याद रखना चाहिए। आप कतना भी ऊंचा पहुचे ले कन जन्मभू म को न भूले। तीसरा अपनी मातृभाषा को हमेशा याद रखना चाहिए और उसे प्रोत्साहन देना चाहिए। मातृभाषा इंसान की आंख होती है। भाषा और भावना एक साथ चलती है। अपनी भाषा मे ही भावना को बेहतर प्रस्तुत कर सकते है। उपराष्ट्रपति ने कहा क लैटिन अमेरिका में लोग अपनी मातृभाषा नही जानते। क्यों क स्पेनिशों ने वहां की भाषा बदल दी। और, सबसे महत्वपूर्ण हमें अपने राष्ट्र को हमेशा याद रखना चाहिए। हम अलग अलग है ले कन सब एक है। भारत एक भारत ही है। अलग अलग भाषा अलग अलग पन्थ है पर, है अपना देश। उन्होंने एक उदाहरण देते हुए कहा की जब शरीर के कसी भाग में चोट लगती है तो पूरा शरीर दर्द करता है।उसी तरह देश भी है।

उपराष्ट्रपति ने कहा क इनके अलावा अपने गुरु को भी याद रखना बहुत जरूरी है। गुरु ज्ञान देता है। इस लए माँ, मातृभू म, मातृभाषा, देश और गुरु हमेशा याद रखे। यह मंथन भारत को देखने का एक मात्र साधन है।

ववेकानंद के भाषण में उन्होंने कहा क जब भी भारत का सही इतिहास लखा जाएगा तो भारत सच मे वश्वगुरु बन जायेगा। गांधी जी का मानना था क वे भी संस्कृति से परि चत होना चाहते थे। मैं नही चाहता क मेरा घर दीवारों से घेर लया जाए। शंकराचार्य से ववेकानंद तक कई वचारक हुए जिन्होंने सामाजिक सौहार्द्र के लए समाज को प्रेरित कया है। आत्मबोध ही हमारा गौरव है। सामाजिकता का अंकुर हर क्षेत्र में फूटना चाहिए।

श्री एम वेंकैया नायडू ने कहा क आज लोकमंथन एक संस्कार है। सार्थक समाज का निर्माण होगा। भारत एक महान देश है। हमारी संस्कृति महान है। भारत हमेशा से अपने संस्कार के लए जाना गया है। दुनिया भर से बच्चे यहां शक्षा लेने आते थे। भारत ने कभी कसी देश पर आक्रमण नही कया है। यही हमारी संस्कृति है। मुझे यकीन है क भारत नंबर वन बनेगा।

धर्मनिरपेक्षता हर भारतीय के डीएनए में है।

भारत चाहता है क पूरा वश्व शांति के साथ रहे।

संस्कृति एक जीवन पद्वति है।

अपनी रोटी बांट कर खाना भारत की संस्कृति है। अंतिम व्यक्ति तक सरकार पहुंचे। यहां के युवाओं के कौशल को बढ़ा कर उनको पहले पायदान पर लाने की जरूरत है। ये तीन दिन सकारात्मक चर्चा होगी। तभी मंथन से अमृत निकल सकेगा।

लोग अपने संकु चत मान सकता से बाहर आये यही हमारा सुझाव है।

भारत वश्व गुरु की भू मका में फर से--रघुवर दास, मुख्यमंत्री

अपने अध्यक्षीय भाषण में मुख्यमंत्री श्री रघुवर दास ने कहा क बिरसा मुंडा सहित झारखंड और देश के सभी शहीदों को अपनी श्रद्धांज ल देता हूँ। मुख्यमंत्री ने देश भर से आये सभी अति थयों का झारखंड की धरती पर सवा तीन करोड़ जनता की तरफ से करते हुए कहा क लोकमंथन ने देश दुनिया के गणमान्य लोगों को यहां आमंत्रित कया है इससे झारखंड गौरवान्वित हुआ है।

उन्होंने कहा क 1857 से ही झारखंड की कोख से कई वीर शहीदों ने जन्म लया जिन्होंने भारत पर खुद को न्यौछावर कर दिया। उन्होंने कहा क झारखंड की संस्कृति इस आयोजन के माध्यम से देश दुनिया मे अपनी छटा बिखेरेगी।

मुख्यमंत्री ने कहा क इस सम्मेलन से हम भारत को वश्वगुरु बनाने का संदेश दें। सारा देश एक अरब 32 करोड़ की आबादी भारत को वश्वगुरु बनाने के लए स्वामी ववेकानंद के सपने को पूरा करने के लए प्रतिबद्ध हैं। हमारे प्रधानमंत्री जी का मानना है क सबका साथ, सबका वकास। तभी भारत आगे बढ़ेगा। मुझे पूर्ण उम्मीद है क इस तीन दिन के लोकमंथन में वैचारिक मन्थन होगा। इस सम्मेलन से हम भारत को वश्वगुरु बनाने का एक संदेश दें।

श्री जे नंदू कुमार ने लोकमंथन का प्रस्तावना प्रस्तुत करते हुए कहा क यह लोकमंथन का द् वतीय संस्करण है। पहले संस्करण का आयोजन भोपाल में हुआ। इस कार्यक्रम की सोच है क भारत का वचार प्रणाली पूरा समाज मल कर (इसमें सभी सम्मि लत है, क व, लेखक आदि) करते थे। भारत बोध को बनाने में सभी का सहयोग रहा है। वश्व का मंगल करने वाला गीत भारत के हर क्षेत्र के लीग गाते है। भारत बोध को मजबूत करने के लए लोकमंथन का आयोजन हुआ है।

उन्होंने कहा क आजादी के बाद इसे फर से शुरु करने का प्रयास 2016 में हुआ। 2018 में रांची में भारत बोध कैसे राष्ट्र में, लोगों में और हर इंसान के मन मे है इस पर चर्चा होगी। यह एक वलय है संस्कृतियों, कला, गीत, वचार का। उन्होंने कहा क सब मल कर इसे सफल बनाएंगे ऐसे संकल्प की जरूरत है।

इस अवसर पर भारत दर्शन पुस्तक का लोकार्पण भी हुआ।

पर्यटन , खेल कूद एवं कला संस्कृति मंत्री श्री अमर कुमार बाउरी ने सभी के प्रति आभार व्यक्त कया।

उद्घाटन समारोह में मुख्य अति थ उपराष्ट्रपति श्री एम वेंकैया नायडू, झारखंड की राज्यपाल श्रीमती द्रौपदी मुर्मू, कार्यक्रम के अध्यक्ष मुख्यमंत्री श्री रघुवर दास, पर्यटन, खेल कूद एवं कला संस्कृति मंत्री श्री अमर कुमार बाउरी, लोकमंथन के श्री जे अनंत कुमार जी, रांची की मेयर श्रीमती आशा लकड़ा, श्री बत्रा, श्री मनमोहन वैद्य, श्री सद्धनाथ, श्री रामदत्त चक्रधर, श्री र वशंकर, झारखण्ड मंत्रिपरिषद के सभी मंत्रीगण, सांसद एवं वधायकगण, लोकमंथन एवं प्रज्ञाप्रवाह के सभी अ धकारी, आयोजन स मति के सदस्यगण, लोकमंथन कार्यक्रम में देश- वदेश से आये बु द्धजीवी और बड़ी संख्या में छात्र-छात्राएं उपस्थित थे।